तुलसी की खेती

तुलसी तुरवातिक्ता तीक्ष्णोष्णा कटुपाकिनी।
रुक्षा हृद्या लघुः कटुचौहिषिताग्नि वद्र्धिनी।।
जयेद वात कफ श्वासा कारुहिध्मा बमिकृमनीन।
दौरगन्ध्य पार्वरूक कुष्ट विषकृच्छन स्त्रादृग्गदः।।

हिंदी अनुवाद

तुलसी कड़वे और तीखे स्वाद वाली कफ, खांसी, हिचकी, उल्टी, दुर्गंध, हर तरह के दर्द, कोढ़ और आंखों की बीमारी में लाभकारी है। तुलसी को भगवान के प्रसाद में रखकर ग्रहण करने की भी परंपरा है, ताकि यह अपने प्राकृतिक स्वरूप में ही शरीर के अंदर पहुंचे और शरीर में किसी तरह की आंतरिक समस्या पैदा हो रही हो तो उसे खत्म कर दे। शरीर में किसी भी तरह के दूषित तत्व के एकत्र हो जाने पर तुलसी सबसे बेहतरीन दवा के रूप में काम करती है। सबसे बड़ा फायदा ये कि इसे खाने से कोई रिएक्शन नहीं होता है।

भारत में तुलसी का पौधा धार्मिक एवं औषधीय महत्व का है। इसे हिंदी में तुलसी, संस्कृत में सुलभा, ग्राम्या, बहूभंजरी एवं अंग्रेजी में होली बेसिल के नाम से जाना जाता है। लेमिएसी कूल के इस पौधे की विश्व में 150 से ज्यादा प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसकी मूल प्रकृति एवं गुण एक समान हैं।

कुल :	w : Lamiaceae। लैमिएशी
वंश :	w : Ocimum। ओसिमम
जाति :	O. Sanctum

प्रमुख प्रजातियाँ निम्न प्रकार हैं :

1. **बेसिल तुलसी या फ्रेंच बेसिल**
   - स्वीट फेंच बेसिल या बोबई तुलसी
   - कर्पूर तुलसी
   - काली तुलसी
   - वन तुलसी या राम तुलसी
   - जंगली तुलसी

2. **होली बेसिल**
   - श्री तुलसी या श्यामा तुलसी

तुलसी अत्यधिक औषधीय उपयोग का पौधा है। जिसकी महत्ता पुरानी चिकित्सा पद्धति एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति दोनों में है। वर्त्तमान में इससे अनेकों खाँसी की दवाएँ साबुन, हेयर शैम्पू आदि बनाए जाते लगे हैं। जिससे तुलसी के उत्पाद की मांग काफी बढ़ गई है। अतः मांग की पूर्ति बिना खेती के संभव नहीं हैं।

औषधीय पादपों की खेती के लिए सनराइज एग्रीलैंड ग्रुप ऑफ कंपनी की तरफ से मिलने वाली सुविधाएं

हैनिमन चैरिटेबल मिशन सोसाइटी (HCMS)

हैनिमन चैरिटेबल मिशन सोसाइटी यह एक NGO है जिसका निर्माण किसानो और गांव बसने वाले भारत को आर्थिक दृष्टिकोण से ऊपर लेन के लिए हुआ 1996 में डॉ। अतुल गुप्ता द्वारा किया गया, यह NGO किसानो को औषधीय पादपों की खेती के लिए प्रेरित कर उन्हें वर्त्तमान काल में उपयोगी और फायदेमंद खेती के लिए विभिन्न दिशाओं में सहयोग करती है। आज के दिन इस NGO को इस क्षेत्र में 25 सालों से ज्यादा का अनुभव है।

सनराइज एग्रीलैंड डेवलपमेंट एंड रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड

सनराइज एग्रीलैंड डेवलपमेंट एंड रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड कंपनी की शुरुवात 2007 में किसानो को उनके माल के लिए मार्केटिंग की सुविधा उपलब्ध कराने और उसी माल से 400 से ज्यादा प्रकारके औषधीय उत्पादनो का निर्माण करने के लिए की गयी है।

यह कंपनी एकल किसानो / किसानो के समूह / NGO / FPO /FPC / कॉर्पोरेट कंपनी / कोआपरेटिव सोसाइटी या किसी अन्य समूहों के साथ बायबैक एग्रीमेंट कर उनके जमीन से निकलने वाले माल को मार्केटिंग की व्यवस्था प्रदान करने का कार्य कर रही है।

अंतर्राष्ट्रीय उन्नत कृषि कौशल विकास संस्थान (IIASD)

यह भारत का एकमात्र ऐसा संसथान है जहा कृषि या सलग्न विषयो पर विभिन्न प्रकारके प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम चलाये जाते है।

विशेषतः यह कोर्सेज एकल किसानों / किसानों के समूह / NGO / FPO / कॉर्पोरेट कंपनी / कोआपरेटिव सोसाइटी / कृषि विद्यार्थियों / कृषि में कार्यरत व्यवसायियों / कृषि व्यापारियों या किसी अन्य समूहों के के लिए बनाये गए है।

यह सभी पाठ्यक्रम प्रैक्टिकल पर आधारित है जिससे इसमें शामिल होने वाले सभी को एक सदय स्थिति और भविष्य में होने वाले बदलावों के अनुसार जानकारी दी जाती है।

आर्गेनिक फार्मर प्रोडूसर एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया (OFPAI)

OFPAI का निर्माण भारतीय जैविक किसानो / किसानो के समूह / NGO / FPO - FPC / कॉर्पोरेट कंपनी / कोआपरेटिव सोसाइटी या किसी अन्य किसी समूहों को उनके लिए व्यापारिक दृष्टिकोण के साथ एक मंच उपलब्ध कराना है। यह एसोसिएशन पुरे भारत में कार्यरत है, जिसमे भारत के सभी राज्यों से किसान भाई सहभाग ले रहे है, एसोसिएशन जैविक खेती के लिए प्रोस्ताहित करने और किसानो को समूह में शामिल करने का काम कर रही है, जिससे किसानो को उनके समूहों को आर्थिक दृष्टिकोण से लाभ मिल रहा है। भारत के 50000 से ज्यादा किसान आज

इस एसोसिएशन से जुड़कर इसकी अलग अलग सुविधाओं का लाभ उठा रही है।

OFPAI सदस्यों को निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करता है।

औषधीय और सुगंधित फसलों, दालों, मसालों, बागवानी फसलों, फूलों की खेती या नियंत्रित कृषि तकनीकों से विभिन्न प्रकार की फसलों की व्यावसायिक खेती के लिए पूरी जानकारी।	जलवायु और मिट्टी के अनुसार फसल का चयन
नर्सरी प्रबंधन	अनुमानित व्यय- आय अध्ययन
जैविक खाद और उर्वरक व्यक्तिगत किसान स्तर पर इकाइयाँ बनाना।	अनुबंध खेती / बायबैक समझौता,
खेती पूर्व अध्ययन।	प्रमाणित रोपण सामग्री
नेशनल कॉल सेंटर	कीट और रोग प्रबंधन।
प्राथमिक प्रसंस्करण / मूल्य वर्धन गतिविधियाँ।	कीट और रोग प्रबंधन।
अपने व्यवसाय को लघु उद्योगों में परिवर्तित करना।	अनुमानित व्यय- आय अध्ययन
अनुबंध खेती / बायबैक समझौता,	
छोटे प्रसंस्करण इकाई स्थापना के लिए प्रक्रिया।	प्रमाणित रोपण सामग्री
जलवायु और मिट्टी के अनुसार फसल का चयन	विपणन
केंद्र और राज्य सरकार की सब्सिडी, ऋण और अन्य वित्तीय सहायता	सिंचाई प्रबंधन।

फसल की आयु

तुलसी की खेती साधारणतः 1 वर्ष की होती है जिसमे 3- 3 महीने के अंतराल से इसके पत्तो को काटा जाता है। एक साल में तुलसी की चार बार कटाई होती है। जिसमे पत्ते और फूल (मंजिरी) भी होते है।

मृदा व जलवायु

इसकी खेती, कम उपजाऊ जमीन जिसमें पानी की निकासी का उचित प्रबंध हो, अच्छी होती है बलूई दोमट जमीन इसके लिए बहुत उपयुक्त होती हैं। इसके लिए उष्ण कटिबंध एवं कटिबंधीय दोनों तरह जलवायु होती है।

बीज

प्रति एकर तुलसी की खेती के लिए 6 किलो बीज की आवश्यकता होती है। तुलसी का बीज आकर में छोटा होने के वजह से उसे जमीन में फेकते समय उसमे 10 :1 में मिटटी या रेत मिलाये। उदहारण- अगर तुलसी का बीज 1 किलो है तो मिटटी या रेत 10 किलो मिलाये।

जमीन की तैयारी

जमीन की तैयारी ठीक तरह से कर लेनी चाहिए। जमीन जों के दूसरे सप्ताह तक तैयार हो जानी चाहिए।

पौध तैयार करना

जमीन की 15 – 20 सेमी. गहरी खुदाई कर के खरपतवार आदि निकाल तैयार करा लेना चाहिए। वर्मीकम्पोस्ट खाद, नीम की खल, ट्राइकोडर्मा पाउडर और जिप्सम को एक मात्रा में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए। बीज की बुवाई 1:10 के अनुपात में रेत या बालू मिला कर 8-10 सेमी. की दूरी पर पक्तियां में करनी चाहिए। बीज की गहराई अधिक नहीं होनी चाहिए।

बुवाई / रोपाई

सूखे मौसम में रोपाई हमेशा दोपहर के बाद करनी चाहिए। रोपाई के बाद खेत को सिंचाई तुरंत कर देनी चाहिए। बादल या हल्की वर्षा वाले दिन इसकी रोपाई के लिए बहुत उपयुक्त होते हैं। इसकी खेती बीज द्वारा होती है, बीज को हात से ज़मीन पर फेंका जाता है और दूसरे तरीके में नर्सरी बनायीं जाती है। परिस्थिति के अनुसार दोनों भी तरीके सही मने जाते है। प्रति एकर 6 किलो बीज की आवश्यकता होती है। बीजों को 2 सैं.मी. की गहराई पर बोयें।

बीज का उपचार

फसल को मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारीयों से रोकथाम के लिए, बिजाई से पहले मैनकोजेब 5 ग्राम प्रति किलोग्राम से बीजों का उपचार करें।

सिंचाई

गर्मियों में, एक महीने में 3 सिंचाइयां करें और बरसात के मौसम में, सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। एक साल में 12-15 सिंचाइयां करनी चाहिए। पहली सिंचाई रोपण के बाद करें और दूसरी सिंचाई नए पौधों के स्थिर होने पर करें। 2 सिंचाइयां करनी आवश्यक है और बाकी की सिंचाई मौसम के आधार पर करें। बारिश के मौसम में जल भराव की समस्या जहा होती है उस क्षेत्र में पानी निकलना जरुरी होता है।

खरपतवार नियंत्रण

इसकी पहली निराई गुड़ाई रोपाई के एक माह बाद करनी चाहिए। दूसरी निराई - गुड़ाई पहली निराई के 3-4 सप्ताह बाद करनी चाहिए। बड़े क्षेत्रों में गुड़ाई ट्रैक्टर से की जा सकती है।

पौधे की देखभाल और रोग नियंत्रण

- **पत्ता लपेट सुंडी**: यह सुंडिया पत्तों, कली और फसल को अपना भोजन बनाती है। यह पत्तों की सतह पर हमला करते है और उसे मरोड़ देती है।
- **तुलसी के पत्तों का कीट**: यह पत्तों को खाते है और अपना मल छोड़ते हैं जोकि पत्तों के लिए बहुत नुकसान-दायक है। शुरुआत में पत्ते मुड़ जाते है और सूख जाते है।
- **पत्तों के धब्बे**: इस बीमारी से फंगस जैसा पाउडर पत्तों और पौधे को प्रभावित करता है।
- **पौधों का झुलस रोग**: यह फंगस की बीमारी है जो बीजों और नए पौधों को नष्ट कर देती है।
- **जड़ गलन**: घटिया निकास के कारण इस पौधे की जड़ें गल जाती है। इसके लिए फाईटो सेनेटरी विधि का प्रयोग करें।

कटाई

जब पौधे में पूरी तरह से फूल आ जाए तथा नीचे के पत्ते पीले पड़ने लगे तो इसकी कटाई कर लेनी चाहिए। रोपाई के 10-12 सप्ताह के बाद यह कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी तुड़ाई पूरी तरह से फूल निकलने के समय की जाती है। पौधे को 15 सैं.मी. जमीन से ऊपर रखकर शाखाओं को काटें ताकि इनका दोबारा प्रयोग किया जा सकें। भविष्य में प्रयोग करने के लिए इसके ताज़े पत्तों को धूप में सूखाया जाता है।

प्रति एकर कुल खर्चे और आय

क्रमांक	ब्योरे	विवरण	रकम/ उत्पादन
1	बीज	6 किलो प्रति एकर, रु.1000/- प्रति किलो	6000/-
2	जैविक खाद	वर्मीकम्पोस्ट खाद, नीम की खल, ट्राइकोडर्मा पाउडर और जिप्सम	20,000/-
3	अन्य खर्चे	जमीन तैयार करना, लेबर, पानी, बिजली और कटाई	31,000/-
4	कुल खर्चे	(प्रति एकर)	57,000/-
5	उत्पादन	सूखे पत्ते /मंजिरी	2500 किलो
6	बायबैक रेट	रु.60/- प्रति किलो, 2500 X 60=	1,50,000/-
7	कुल नकद आय (प्रति एकर)	1,50,000 – 57,000=	93,000/-

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे

मोबाइल : 97850-15005, 98875-55005, 81073-79410, 83291-99541, 96100-02243, 78919-55005

ईमेल : • atul.hcms@gmail.com, • info@iiaasd.com, • organic.naturaljpr@gmail.com,
• info@sunriseagriland.com, sunriseagrilandb2b@gmail.com

वेबसाइट : • www.hcms.org.in, • www.iiaasd.com, • www.sunriseagriland.com

महत्वपूर्ण लिंक्स : • https://www.hcms.org.in/ofpai.php, • https://www.hcms.org.in/sunrise-organic-park.php
• https://www.hcms.org.in/mai-hu-kisan.php • https://www.hcms.org.in/organic-maures-and-pesticides.php

Organic SUNRISE Natural

OFPAI

(IIAASD)

हैनीमैन चैरीटेबल मिशन सोसायटी

JKM Organic & Herbs Pvt. Ltd.

मैं हूं किसान

Sunrise Organic Park